॥ आरती ॥

ओम जय जगदीश हरे, स्वामी जय जगदीश हरे ।
भक्त जनो के संकट छण मे दूर करे ॥

जो ध्यावे फल पावे दूख बिनशे मन का,
सुख सम्पति घर आवे कष्ट मिटे तन का ।
मात पिता तुम मेरे शरण गहु किसकी,
तुम बिन और ना दुजा आस करु किसकी ।
तुम पूरण परमात्मा तुम अन्तरयामी,
पार ब्रह्म परमेश्वर तुम सब के स्वामी ।
तुम करुणा के सागर तुम पालन कर्ता,
मै मूरख खलकामी कृपा करो भर्ता ।
तुम हो एक अगोचर सबके प्राणपति,
किस विधि मिलु दयामय तुमको मै कुमति ।
दीन बन्धु दुख हरता ठाकुर तुम मेरे,
अपने हाथ उठाओ द्वार पडा तेरे ।
विषय विकार मिटाओ पाप हरो देवा,
श्रद्धा भक्ती बडाओ सन्तन की सेवा ।
तन मन धन सब तेरा सब कुछ हे तेरा,
तेरा तुझको अर्पण क्या लागे मेरा ।

स्वामी मोहे ना विसारिओ चाहे लाख लोग मिल जाये,
हम सब तुमको बहुत है तुम सम हमको नाही।
दीन दयाल को विनति तुम सुनो गरीब नवाज़,
जो हम पूत कपूत है तोहे पिता की लाज।

हरि हरि ओम, हरि हरि ओम.....